B.A. Part 2
Paper III ??

21-4-20

खेतिहर मजदूरों की हीनावस्था के कारण :-

वर्षों से भारत में खेतिहर मजदूरों की स्थिति अत्यंत दयनीय हो जाती है। ब्रिटिश शासनकाल में इनकी स्थिति को सुधारने के लिए प्राय: कोई भी प्रयत्न नहीं किया गया था। फलत: इनकी कठिनाइयाँ और भी बढ़ती गयी। भारतीय खेतिहर मजदूरों की हीनावास्था के निम्नांकित प्रधान कारण हैं -

1. जनसंख्या की अत्यधिक वृद्धि के परिणामस्वरूप कृषि-भूमि का निरंतर उपविभाजन (Sub-division of land due to excessive growth of population) - भारत की जनसंख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है जिसके फलस्वरूप किसानों की भू-सम्पत्ति का उपविभाजन बढ़ते ही जा रहा है ~~आ~~ तथा जोतें छोटी होती जा रही हैं। खेतों का आकार छोटा होने के कारण कृषि-कार्य अलाभकर हो जाता है। फलस्वरूप किसानों की भू-समपति का उपविभाजन बढ़ते ही जा रहा है तथा जोतें छोटी होती जा रही हैं। खेतों का आकार छोटा होने के कारण कृषि-कार्य अलाभकर हो जाता है। फलस्वरूप किसानों का निर्वाह केवल अपनी भूमि से ही नहीं हो पाता और वे कम ही मजदूरी पर कार्य करने के लिए विवश होते हैं। इस प्रकार देश की बढ़ती हुई जनसंख्या तथा इसके फलस्वरूप भू-संपति के निरंतर उपविभाजन के कारण खेतिहर मजदूरों की निर्धनता तथा विवशता बढ़ती ही जा रही है।

2. कुटीर उद्योग-धन्धों का ह्रास (Decline of the cottage Industeries) - भारत में ब्रिटिश शासनकाल के प्रारंभ से ही अनेक कारणों से कुटरी उद्योगों का विनाश होने लगा जिससे देश में सहायक उद्योग-धन्धों का सर्वथा अभाव हो गया। कुटीर उद्योगों के विनाश से बहुत-से कारीगर बेकार हो गए तथा उन्हें बाध्य होकर कृषि का कार्य करना पड़ा। इससे खेतिहर मजदूरों की संख्या में वृद्धि हो गया और इन्हें कम मजदूरी पर ही कार्य करने के लिए विवश होना पड़ा।

Scanned by CamScanner

3. कर्ज का अतिशय बोझ (Burden of indebtedness) - हमारे देश के खेतिहर मजदूरों की आय इतनी कम है कि उन्हें अपनी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कर्ज लेना पड़ता है। इसके अतिरिक्त विवाह एवं श्राद्ध आदि विशेष अवसरों पर भी कर्ज लेते हैं। मजदूरी कम होने के कारण ये कर्ज चुकाने का बहुधा असमर्थ रहते हैं तथा लाचार होकर ~~उन्~~ इन्हें अपनी संपत्ति बेचनी पड़ती है। कभी-कभी तो कर्ज के लिए इन्हें अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता तक को भी गिरवी रखनी पड़ती है जिससे ये महाजनों के दास की तरह हो जाते हैं। इस प्रकार कर्ज के बोझ से खेतिहर मजदूरों की आर्थिक विषमता बढ़ती जा रही है।

4. निरंतर कार्य का नहीं मिलना (Seasonal character of employment) - भारत में खेतिहर मजदूरों को कम मजदूरी पर भी निरंतर कार्य नहीं मिलता। ये वर्ष के अधिकतर भाग में बहुधा बेकार ही रहते हैं। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि ये वर्ष में 4-5 महीने तक बेकार ही रह जाते हैं। किसी-किसी भाग में तो ये 6 महीने तक बेकार रह जाते हैं। द्वितीय कृषि श्रम जाँच समिति के अनुसार 1956-57 ई० में खेतिहर मजदूरों को वर्ष में औसतन 194 दिनों तक कार्य मिलता था तथा 40 दिनों तक ये अपना कार्य करते थे। इस प्रकार समिति के अनुसार 1956-57 में ये 168 दिन तक बेकार थे। आसंजित मजदूरों को भी वर्ष में औसत 326 दिन ही काम मिलता है। इनके लिए बेकारी का समय बड़ा ही दुःख हो जाता है और फलस्वरूप भोजन-वस्त्र आदि के लिए भी कर्ज लेना पड़ता है; अतः निरंतर काम न मिलने के कारण इनकी आर्थिक स्थिति ~~खराब होती जाती है~~ जा रही है।

5. मजदूरी चुकाने की दोषपूर्ण पद्धति (Defective system of wage payments) - हमारे देश में खेतिहर मजदूरों को मजदूरी चुकाने की पद्धति भी दोषपूर्ण है। कहीं तो मजदूरी नकद रुपया में चुकायी

Scanned by CamScanner

जाती है; कहीं अन्न के रूप में और कहीं दोनों के रूप में। परंतु आजकल मजदूरी प्रायः द्रव्य के रूप में ही दी जाती है। इससे मजदूरों को वास्तव में क्षति होती है, क्योंकि वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि के फलस्वरूप मजदूरी में उस अनुपात में वृद्धि नहीं हुई है। अतः इन्हें कम वास्तविक मजदूरी ही मिलती है। इस प्रकार मजदूरी चुकाने की विभिन्नता पूर्ण एवं दोषमुक्त पद्धति के कारण भी मजदूरों की स्थिति दयनीय होती जा रही है।

6. दोषपूर्ण रैयती कानून तथा अनुपस्थित जमींदारी व्यवस्था (Defective tenancy Legislation and absentee Landlordism) हमारे देश में वर्तमान रैयती कानून भी खेतिहर मजदूरों की संख्या में वृद्धि के लिए बहुत हद तक उत्तरदायी है। ये मजदूर दूसरों की भूमि पर कार्य करते और केवल अपनी मजदूरी को ~~ल~~ भागी होते हैं। जमीन का मालिक बधुआ खेती से बहुत दूर रहता है, फिर भी वह संपूर्ण उपज का हकदार होता है। अनुपस्थित ~~ज~~ जमींदारी व्यवस्था के कारण भी इनकी आर्थिक विषमता में वृद्धि हुई है। बड़े-बड़े जमींदार गाँवों में न रहकर नगरों में रहना अधिक पसंद करते हैं। इनकी अनुपस्थिति में जमींदारी की व्यवस्था इनके कर्मचारियों द्वारा ही की जाती है जो किसानों पर तरह-तरह के अत्याचार करते हैं। बहुत से किसान इस प्रकार भूमि से बेदखल कर दिये जाते हैं और इन्हें बाध्य होकर खेतिहर मजदूरों की श्रेणी में आना पड़ता है।

7. खेतिहर मजदूरों में संगठन का अभाव (Lack of organisation among the agricultural labourers) – हमारे देश में खेतिहर मजदूरों के बीच अभी संगठन का पूर्णतया अभाव पाया जाता है। विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रयास के फलस्वरूप देश के औद्योगिक मजदूर दिन-प्रतिदिन संगठित होते जा रहे हैं जिससे उनकी स्थिति में सुधार होते जा रहा है।

Scanned by CamScanner

किंतु खेतिहर मजदूरों में अभी संगठन का अभाव है। अतः इनकी कठिनाइयों को दूर करने के लिए इनके द्वारा संगठित प्रयत्न नहीं किया जाता। वास्तव में दूर-दूर तक बिखरे गाँवों की बिखरी बस्तियों में निर्धन जीवन व्यतीत करनेवाले खेतिहर मजदूरों के बीच संगठन की प्रवृत्ति का अभाव अति स्वाभाविक है। इस प्रकार ~~न~~ उचित संगठन के अभाव के कारण भी इनकी आर्थिक विवशता अधिक हो गयी है।

8. खेतिहर मजदूरों के प्रति सरकार और समाज की उदासीनता (Indifferent attitude of the govt. and the society towards Agricultural labourers) – हमारे देश में खेतिहर मजदूरों के प्रति सरकार एवं समाज प्रारंभ से ही उदासीन रहे हैं। ब्रिटिश शासनकाल में तो इनकी स्थिति में सुधार लाने के लिए कोई भी प्रयास नहीं किया गया जिससे इनकी आर्थिक आर्थिक विवशता बहुत बढ़ गयी। इसमें कोई संदेह नहीं कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद इस ओर सरकार का ध्यान विशेष रूप में आकृष्ट हुआ, फिर भी इस दिशा में अभी कोई महत्वपूर्ण सुधार नहीं हो पाया है।

Scanned by CamScanner